

## Sunday Avyakt Murli Revision Class

### सिद्धि का आधार - श्रेष्ठ वृत्ति

AM 04-04-2021 (Rev. 06.12.87)

**By BK Dr Sachin Bhai Ji**

Class Date : 04-04-2021

Venue- Meditation Hall,

Pandav Bhawan

ओम शांति। किसी एक लेखक ने अपने जीवन का एक मार्मिक संस्मरण लिखा है। उसने लिखा है कि एक सर्द की रात थी, कडाके की ठंड थी, दफ्तर से बहुत देर हो गई थी और मैं घर की ओर आ रहा था, घर के द्वार तक पहुंचा, फाटक बंद था, हॉर्न बजाया गाड़ी का पर शायद घर के लोग सो रहे थे। कार के अंदर बैठा था, 12 बज रहे थे, जैकिट पहना हुआ था फिर भी ठण्डी इतनी ज्यादा थी कि लग रहा था कार में कोई जगह है जहां से ठण्डी हवा अंदर आ रही है। सुराख ढूँढ रहा था। कई बार हॉर्न बजाने के बाद जब घर से किसी ने भी वो फाटक नहीं खोला तो मैं खुद उतरा वास्तव में देखा कि ठण्डी तो बहुत ज्यादा है और लेखक ने लिखा मैंने कार अंदर ली और जब दरवाजा बंद करने के लिए गया तो देखा दरबाजे के पास एक छोटा सा बच्चा एक कुत्ते के साथ लेटा हुआ है। अधफटी एक चादर थी जो दोनों के ऊपर थी लेखक ने लिखा कि सर्द का मौसम इतना ज्यादा था कि महंगा जाकिट पहन कर भी मुझे ठण्डी लग रही थी। मैं सोच रहा था कि उनकी क्या हालत हो रही होगी। कार की आवाज सुनते ही वो कुत्ता उठा और कार के नीचे आ गया शायद इंजन गर्म था। इसीलिए वो वहाँ आ गया होगा और मैंने उस कार से उस कुत्ते को फिर नहीं हटाया सोने दिया और पीछे के दरवाजे से घर गया सब सो रहे थे घर वाले, मैं अपने बेडरूम में गया। रजाई, चादर, कंबल, हीटर सब कुछ था और लेटे-लेटे सोच रहा था कि इतना सब होने के बावजूद भी मुझे ठण्ड लग रही है उस बच्चे का क्या हो रहा होगा। ऐसा लगा कि उसके लिए कुछ करना चाहिए परन्तु तब तक तो ये घर में आ गया था और सोच चल रही थी उसके मन के अंदर कि कैसे वो दोनों सो रहे होंगे और कैसे अब तो वो अकेला बच्चा बाहर है क्या हो रहा होगा उसका और सोचते-सोचते लेखक लिखता है मैं सो गया। सुबह जब आंख खुली तो देखा कि घर के बाहर भीड़ है और लोग कह रहे अरे वो जो चाय वाला लड़का था न वो मर गया कल रात को ठण्डी के वजह से उसके आगे पीछे कोई नहीं था, रोने वाला कोई नहीं था परन्तु लेखक के आंख में आंसू आ गये ये सोचकर क्या मैं कुछ कर सकता था? ये सोचकर क्या मानव होना मैं जानता हूँ? इस घटना ने उसके जीवन में अमूल परिवर्तन लाया। आगे उस लेखक ने लिखा कि मैंने जाना मानव बनना अर्थात् दूसरों की मदद करना

और उसने अपना जीवन फिर गरीबों की मदद में लगाया। उनको खाना खिलाना, कपड़े पहनाना, दान करना और लिखा शायद दूसरों के लिए जीना ही मानव बनना है। संसार में बड़ा पुण्य माना जाता है किसी के लिए कुछ करना, शायद वो लोग आध्यात्म को नहीं जानते और न ही जानना चाहते हैं परन्तु इस बात से हर प्रकार से अवगत हैं कि वास्तविक खुशी तभी होती है जब हम निःस्वार्थ भाव से किसी के लिए कुछ करते हैं। जब चेतना इतनी शुद्ध होती है भीतर से कि अपने आप वो तरंगे उठती है कि किसी के लिए कुछ करूं, किसी के लिए कुछ करूं अपने लिए बहुत जी लिया। क्या करूं किसके लिए? और अंतस्चेतना में उठने वाली इन तरंगों के लिए एक शब्द है वृत्ति, वृत्ति अर्थात् तरंगें, वृत्ति अर्थात् लहरें। जैसे कोई एक निष्कंप झील, निस्तरंग झील है, इतनी शांत है कि उसमें चन्द्रमा का प्रतिबिंब दिख रहा है और कोई एक पत्थर फेंक दे, जो तरंगें उठती हैं उन तरंगों को, वृत्ताकार जो तरंगें, उन्हीं तरंगों को वृत्ति कहा गया है। वृत्ति की परिभाषा बड़ी जटिल है। वृत्ति किसे कहा जायेगा ये समझना भी कठिन है। शब्द भिन्न-भिन्न है और द्वापर से अब तक शास्त्रों में, अनेकानेक धर्मों में वृत्ति शब्द का अलग-अलग अर्थ बताया गया है। बौद्ध धर्म में बताया चित्त और वृत्तियां, मन को चित्त कहा और चित्त की वृत्तियां, चित्त 121 प्रकार के बतायें और वृत्तियां 52 प्रकार की। पतांजलि योग सूत्र है उसमें 5 प्रकार की वृत्तियां बताई हैं। चित्त, मन और मन के अंदर जो कुछ हो रहा है, जो कुछ अच्छा-बुरा (Positive, Negative) ऋणात्मक, धनात्मक जो कुछ उसमें हो रहा है वो सब वृत्तियां हैं। उसमें स्वप्न भी है, उसमें निद्रा है, उसमें स्मृति है, उसमें विकल्प है, पर्याय है, प्रमाण है। 5 प्रकार वृत्तियों के - प्रमाण, विपर्यय, विकल्प, निद्रा और स्मृति (Direct Knowledge, Incorrect Misconception, Imagination, Sleep and Memories). ऐसी पांच प्रकार की वृत्तियां है और योग की तो परिभाषा ही दी है - **चित्त वृत्ति निरोधः इति योगः** । इन चित्त की वृत्तियों को (Fluctuation Of Mind , Modification Of Chitta Are Called Vrittis) चित्त में जो कुछ भी उत्पन्न हो रहा है, जो तरंगें उत्पन्न हो रही है, जो हलचल हो रही है, जो कुछ हो रहा है वो सब कुछ वृत्ति है। तो आज की अव्यक्त वाणी, बाबा वृत्ति की चर्चा कर रहे हैं। इंग्लिश में ट्रांसलेशन (Translation) है एटिट्यूड (Attitude). बडा ही पूअर (Poor) ट्रांसलेशन (Translation) है। एटिट्यूड (Attitude) कुछ और होता है, वृत्ति को एटिट्यूड (Attitude) नहीं कहा जा सकता। वृत्ति वृत्ति ही है, उसका शायद पर्यायवाची शब्द ही नहीं क्योंकि वृत्ति में परसेप्शन (Perception) है, थॉट (Thought) नहीं है, केवल विचार नहीं है, केवल संकल्प नहीं है, केवल कल्पना नहीं है, केवल विकल्प नहीं है। विकल्प भी है, कल्पना भी है , पर्याय भी है, प्रमाण भी है, स्वप्न भी है, निद्रा भी है, स्मृतियां भी है, सब टोटल (Total) जो कुछ है, जो कि भीतरी मन में चल रहा है, चेतना में चल रहा है, वो सब सब वृत्ति है। आज की मुरली में बाबा ने वृत्ति पर चर्चा की, मुरली

का हेडिंग क्या है? सिद्धि का आधार श्रेष्ठ वृत्ति। शास्त्रों में हमारे 5 शरीरों का वर्णन है। जो दिखाई दे रहा है, जो स्थूल है, जो पार्थिव है, उसे कहा अन्नमयी कोष जिसके लिये भोजन की आवश्यकता है वो ही है देह। भोजन, भौतिक वस्तुयें जो इसे प्रभावित करती हैं जिस पर ये पलता है वो अन्नमयी कोष है और कईयों का जीवन केवल इस अन्नमयी कोष के इर्द-गिर्द ही घूम रहा है, इसके बाहर वो जा ही नहीं पाते, इसके भीतर पहुंच ही नहीं पाते। उसके अंदर है प्राणमयी कोष। हमारे ज्ञान में हम बताते हैं आत्मा है, शरीर है पर क्या इन दोनों को जोड़ने वाला भी कुछ बीच में है? एक है आत्मा, एक है शरीर उन दोनों के बीच में है प्राण जो आ रहा है जा रहा है, आ रहा है जा रहा है, जो सर्वत्र है, जो ऊर्जा है। इसीलिये हमारा एक दूसरा शरीर भी है जिसको कहा है प्राणिक बॉडी (Pranic Body), प्राणमयी कोष ऊर्जा का कोष है वो इनर्जी बॉडी (Energy Body), बायोप्लासमिक बॉडी (Bioplasmic Body)। जैसे ही अभी तो आत्मा तक हम पहुंचे ही नहीं केवल इस भाव में भी स्थित हो कि मैं ऊर्जा हूं। अपने आप देह और देह को जो कुछ चाहिए वो कम होने लगेगा क्योंकि हम ऊर्जा के तल पर जीने लगेंगे। इलेक्ट्रिक बॉडी (Electric Body) प्राणमयी कोष, उसके भीतर मनोमयी कोष। मन को चित्त कहा और चित्त और चित्त से जुड़ी हुई सारी वृत्तियाँ। मन झील की तरह है, तरंगें वृत्तियों की तरह है। जो कुछ उसमें उठ रहा है (Fluctuation, Modification) वो सब तरंगें हैं, जो उस तल पर जीते हैं वो मनोमयी कोष के तल पर जीते हैं। वो विज्ञान को चमत्कृत कर देते हैं क्योंकि विज्ञान कहता है कि ये हो नहीं सकता, परन्तु वो मन से कर देते हैं। एक साधु है, एक योगी है, अंगारों पर चल रहा है, लोग देख रहे हैं, आश्चर्यचकित है, कैसे हो सकता है? ये अंगार पर चल रहा है योगी, शरीर वही है उसका जो हमारा है और उसके पैर वो अंगारे टच भी नहीं कर रहे हैं, चलता है फिर लौटता है, फिर चलता है फिर लौटता है। एक वैज्ञानिक देख रहा है, कहता है जरूर कोई छल है, कुछ तो गड़बड़ है, ऐसा हो नहीं सकता क्योंकि प्रकृति के नियम सबको समान रूप से लागू हैं। कोई कुछ भी हो आग तो जलायेगी, क्यों ये योगी के पैर नहीं जल रहे हैं? इतना वो सोच ही रहा था कि वो योगी उसका हाथ पकड़कर उसको ऊपर ले लेता है और वो भी चल रहा है और उसको भी पैर नहीं जल रहा है, अब क्या था, वो इनर्जी पैड। उसके पैर और अंगार के बीच में कोई एक कवच है, उसके पैर और अंगारों के बीच में एक कुशन है, एक बफर (buffer) है, उस वफर (buffer) को कहा एनर्जी पैड। वो उसने कहाँ निर्माण किया? मन में। उसका संबंध बाहर से नहीं, वो मन की कृति है, निर्मिती है जिसने मन में कुछ सोच लिया और इतनी दृढ़ता से सोचा, प्राणपन से सोचा, रग-रग में सोचा, वो चीज फिर उसके लिए वास्तविक हो जायेगी। इसीलिए भारत के योगियों ने विश्व भर को हमेशा चमत्कृत किया, ऐसी-ऐसी चीजें कर दिखाईं विज्ञान सोच भी नहीं सकता। विज्ञान कहता है असंभव है। मनोमयी कोष। चौथा विज्ञानमयी कोष, हमारे ज्ञान की भाषा में इसको

कहेंगे बुद्धि (Intellect). और पांचवा आनंदमयी कोष, आत्मा। तो आत्मा, बुद्धि, मन, शरीर और बीच में नया जो बाबा ने जिसका कभी वर्णन इतना नहीं किया जिसे कुदरत कहा, कभी श्वास, प्राण। परन्तु प्राण केवल श्वास नहीं पंचकोष है और वृत्तियां मन में उठती है और लंबा समय मन में वृत्तियां उठती रहीं। फिर वो धीरे-धीरे बुद्धि से कार्य करती है और धीरे-धीरे संस्कार का रूप धारण करती हैं। आत्मा और बुद्धि के बीच एक मिसिंग (Missing) कड़ी है संस्कार। आज बाबा ने वृत्तियों की चर्चा की है। उन वृत्तियों को इतना गहरा हो जाने दें कि क्रांति हो जाये और जब भीतर क्रांति हो जायेगी तो बाहर सब कुछ अपने आप घटेगा, फिर कुछ करना नहीं पड़ेगा। लोग केवल बाहर को देखते हैं। लोग देखते हैं महावीर नग्न घूम रहे हैं, कुछ खा नहीं रहे हैं, हम भी वैसा करेंगे। परन्तु जो बाहर हो रहा है वो परिधि पर हो रहा है, वो सोच रहे हैं संयम और शांति, अगर शांति चाहिए तो संयम धारण करो परंतु वो संयम शांति का परिणाम है जो भीतर है इसीलिए शांति भीतर हो रही है, बाहर संयम का उसने रूप धारण किया है। पवित्रता भीतर है, बाहर ब्रह्मचर्य के नियम दिखाई दे रहे हैं और कोई सोचे कि मैं भी केवल नियमों को धारण कर लूं। यात्रा बाहर से अंदर नहीं, अंदर से बाहर है। क्रांति भीतर से बाहर आयेगी। इसीलिए चित्त की वृत्ति में ही अगर परिवर्तन हो जाये और समाने लगे वो सारी धारणायें तो बाहर जो कुछ दिखेगा कर्म के तल पर चलन (Behavior) के तल पर वो परिणाम मात्र होगा और वो सहज होगा, नहीं तो पवित्रता धारण करने जाओ मुश्किल है असंभव सा है। ब्रह्मचर्य के नियम पढ़ो तो कंप जाता है व्यक्ति, ये हम से नहीं होगा, परन्तु वो नियम केवल परिधि है। वो अपने आप घटते हैं ब्रह्मचर्य पुरूषार्थ नहीं परिणाम है। तो आज की मुरली में बाबा ने वृत्तियों की चर्चा की है ऐसी हम 9 वृत्तियों की चर्चा करेंगे जो आज की मुरली में आई हैं।

**1. पवित्रता की वृत्ति** - अगर वृत्ति में पवित्रता है तो सब कुछ अपने आप होगा। क्या-क्या सब कुछ? कौन सी वृत्ति? सभी को देख रहे हैं बाबा, ये हंसों की सभा है और हंस की विशेषता क्या होती है? हंस की 6 विशेषतायें हैं-

(i). पहला हंस जो है उसके पंख निर्लिप्त रहते हैं, जैसे कमल कभी भी गीला नहीं होता, कमल के पत्ते। उसी तरह हंस के जो पंख है वो निर्लिप्त होते हैं इसके लिये हंस प्रतीक है वैराग्य का, हंस प्रतीक है संसार में रहते हुए उस निर्लिप्त अवस्था का, हंस प्रतीक है वैराग्य की स्वतंत्रता का और राग के बंधन से मुक्ति का।

(ii). दूसरा हंस वाहन है- किसका? सरस्वती का, गणेश का, ब्रह्मा का वाहन दिखाया है और वाहन अर्थात् प्यूरिटी का प्रतीक माना गया है उसको जो विद्या की देवी है उसका वो वाहन है।

(iii). तीसरा हंस प्रतीक है विवेक का- कौन सा विवेक? नीर-क्षीर अलग करता है ये पानी ये दूध, दूध और पानी को अलग करने का विवेक हंस में है।

(iv). चौथा हंस रहते कहां है? इस संसार में कहीं है? क्या भारत में हंस वर्तमान में रहते हैं? हंस मानसरोवर झील में रहते हैं और सन्यास मार्ग में एक परम पथ है। जिसे कहते हैं परमहंस, राजहंस वो वैराग्य की ऐसी अवस्था है कि जिसमें व्यक्ति स्थित प्रज्ञ योगी बन जाता है। कुटिचक, बहूदक, हंस, परमहंस चार प्रकार के संयासी है, पांचवा अवधूत, उसके भी ऊपर तो परमहंस अवस्था है जिसमें व्यक्ति अप्रभावित है। बाहर कुछ भी हो रहा है, कुछ भी, वो अपने आनंदमयी कोष में है, वो अपनी आनंदमयी स्थिति में है, कुछ भी उसे प्रभावित नहीं करता। जैसे अनंत आसन पर लेटा हुआ विष्णु, सागर की लहरें हैं, तूफान है, शेष नाग है विषैला, परन्तु वो निश्चित, परमहंस अवस्था है निश्चितता की। हंस प्रतीक है निश्चितता का और खाता क्या है हंस? कंकड नहीं मोती। ये सारी बातें जो है, मिथक है। किसी को पता नहीं कितनी सत्य है, कहानियां बहुत हैं। केवल भारत में ही नहीं, मिस्त्र में, विदेश में अनेकानेक सभ्यताओं में हंसों की कहानी हिंदू धर्म में, बौद्ध धर्म में, कितने-कितने धर्म में अलग-अलग प्रतीक बताये हैं हंस के- काला हंस, नीला हंस, सफेद हंस, राज हंस। ये सभा किसकी है? बाबा ने अपना एक नया हंस तैयार किया है - होली हंस, पवित्र हंस, पुनीत हंस, शुद्ध हंस, विशुद्ध हंस। पावन हंसों की सभा है ये। ये सभा कैसी है? अलौकिक है, न्यारी है। इस सभा का एक-एक हंस कैसा है? विशेष है। एक-एक को कौन सा वरदान प्राप्त हुआ है? विशेष आत्मा भव का वरदान प्राप्त हुआ। पिछले रविवार बाबा ने कहा ये दरबार है राजऋषियों का और अब कह रहे हैं ये सभा है किसकी? होलीहंसों की सभा है। मैं होलीहंसों की सभा में हूं अर्थात् मानसरोवर में हूं, निर्लिप्त हूं। शक्ति है परखने की, पॉवर ऑफ डिसर्नमेंट (Power of Discernment), नीर-क्षीर अलग करने की, कंकड-पत्थर अलग करने की और कोटों में कोई दुर्लभ है, सभी रियरेस्ट ऑफ द रियर (Rarest Of the Rare). अंग्रेजी में कहते है - रियरेस्ट ऑफ द रियर स्पीशीज़ (Rarest Of the Rare Species). तो आज बाबा ने किनको देखा? होलीहंसों को देखा। क्या देखा? विशेषतायें देखी, श्रृंगारित देखा, श्रृंगारी हुई मूर्त देखी, श्रृंगार थी विशेषता। विशेषता थी ज्ञान, गुण, शक्तियां और शक्तियों में भी विशेष आज कहा दो शक्तियां परखना और निर्णय करना, जीवन का खेल इन्हीं दो चीजों पर निर्भर है। प्रतिपल परखना है, निर्णय करना है - परिस्थितियों को, व्यक्तियों को प्रतिपल हर समय जैसे कोई चिकित्सक दिन भर क्या करता? एक ही काम करता बस, परखना निर्णय करना, परखना निर्णय करना या फिर कोई भी व्यवसाय परखना निर्णय करना, सुनना है, नहीं सुनना है, जाना है, नहीं जाना है, खाना है, नहीं खाना है, करना है, नहीं करना है, पढ़ें की नहीं पढ़ें। सारा खेल निर्णय का है, परखने का है। व्यक्तियों को परखना है, दोस्ती बढाऊं या किनारा कर लूं, मोबाइल से बात करूं या नहीं करूं,

मैसेज करूं या नहीं करूं, कॉल करूं या नहीं करूं कि स्विच ऑफ, क्या करूं? कॉल मैसेज? शेयर करूं कि नहीं करूं, बताऊं या अपने तक ही रखूं। सारा खेल कौन सा है? निर्णय परख, परखना है, निर्णय करना है। जल्दी सो जाऊं ताकि जल्दी उठूं या फिर लेट सो जाऊं, परखना है। खेल ही इस पर है सारा, इसलिए अपनी परख शक्ति को तीक्ष्ण करना है। इसके लिए क्या करना पड़ेगा? उसको काम देंगे प्रतिदिन निरंतर परखते रहें। सत्य है असत्य है, नित्य है अनित्य है, सार है असार है। मकड़ी का जाल, बाहर का पंचायत, बाहर का प्रपंच - कल की मुरली में ये तीन वाक्य थे। मकड़ी का जाल, रिशतों को बढाऊं संबंधों को बढाऊं, फंसू उनमें दुखी हो जाऊं, वो सब खाऊँ जिससे बीमार पडूँ या वो सब खाऊँ जिससे स्वस्थ रहूँ निरोगी रहूँ। कल की मुरली में था तुम्हारी काया कल्पतरू, कल्पवृक्ष सी हो जायेगी। सतयुग में नहीं, अभी अपनी काया को कल्पवृक्ष, कल्पतरू सा बना देना है। चैतन्य दौड़ रहा है अंदर ऐसा अनुभव हो। अंग-अंग में स्वास्थ्य का अनुभव हो, ऊर्जा का अनुभव, शक्ति का अनुभव हो और इन सब का आधार क्या है? निर्णय, परख शक्ति, ज्ञान गुण शक्तियां तीन विशेषतायें, तीन श्रृंगार सभी का आधार एक ही चीज है, क्या पवित्रता। इसके लिए सबसे पहली वृत्ति जो भीतर धारण करनी है, वो है पवित्र वृत्ति। जिसकी तीन शाखायें बताई, पहला ब्रह्मचर्य, दूसरा अतीत से मुक्ति हो गई, हो ली और तीसरा प्रभु प्रेम के रंग में रंग जाना। जब भीतर ये पवित्रता स्थापित हो जायेगी, जहां वृत्ति में ही पवित्रता है वहां ब्रह्मचर्य स्वतः घटेगा, पुरूषार्थ नहीं होगा, प्रयत्न नहीं होगा। अपने आप होगा, वहां अतीत दुःखी नहीं करेगा, हो गया खत्म, समाप्त। पवित्र चेतना वर्तमान में जीती है, अतीत के दुःखों से मुक्ति और तीसरा प्रभु प्रेम में डूबी है। अव्यक्त महावाक्य है पवित्रता पवित्रता को खींचती है। जैसे ही पवित्र हो जाये, मन निर्मल हो जाये, जैसे पवित्रता का दिया चेतना में जग जाये, अपने आप उसका आकर्षण संसार से हटकर उस परम ज्योति की ओर स्वतः होने लगता है। इसके लिये अभी-अभी मुरली चली थी पवित्रता कैसी हो स्वतः, सहज, स्वाभाविक, कुदरती। कोई नियमों से अपने आपको बांधना वो अलग चीज है, वो नियम स्वतः हो रहे हैं हम कर कुछ भी नहीं रहे, होश का दिया अंदर जला हुआ है। तो सबसे पहली वृत्ति जो धारण करनी है वो है पवित्रता की वृत्ति। स्वमान मैं परम पवित्र आत्मा हूं, विधि पवित्रता के सागर से सारी किरणें ले लो, खींच लो। अमृतवेला योग में कौन बैठा है सामने, पावनता का सागर, पवित्र किरणें मुझ में आ रही है। क्या हो रहा है तरंगों ही तरंगों, हम विचार भी नहीं कर रहे हैं कुछ, हल्का सा चिंतन है केवल, अशरीरी सी अवस्था है और केवल इतना अर्धचेतन मन में चिंतन जा रहा है वो पवित्रता का सागर है, सूर्य है, उसकी किरणें मुझमें प्रवेश कर रही है। अगर हम इसको चिंतन के रूप में करें तो मेहनत है, मुश्किल है इसलिए चिंतन भी नहीं करो हल्का सा बस किरणें जा रही है और किरणें अवचेतन मन के अंदर जायेंगी सबकानसियस माइंड (Subconscious Mind) में। चिंतन तो चेतन में चलता है, दिन भर

इसके लिए। अमृतवेला का योग सबकानसियस माइंड (Subconscious Mind) पर हो रहा है, कानसियस माइंड (Conscious Mind) जहां शांत हो गया है। इसके लिए वहां शब्द नहीं जा रहे, केवल किरणें जा रही, हम कुछ खास कह नहीं रहे, कुछ बोल नहीं रहे हैं। हां, अगर वहीं योग दिन में करना है तो शायद बहुत कुछ कहेंगे, बहुत कुछ लिखेंगे, बहुत कुछ रिपीट करेंगे और ऑटो सजेशन (Auto Suggestion) देंगे, मैं परम पवित्र आत्मा हूं, पवित्रता के सागर की संतान हूं, पवित्र किरणें मुझमें आ रही है, तरंगें मुझमें आ रही है, मैं मास्टर पवित्रता का सागर हूं, ढेर सारे शब्द जोड़ेंगे। परन्तु अवचेतन मन इन शब्दों की भाषा नहीं समझता, तरंगों की भाषा समझता है। ये अनुभव करना कि ये वो तरंग है, तरंग का सागर है, उसकी तरंगें इस तरंग में आ रही है। बस क्रांति होगी, वृत्ति। पवित्रता का स्वमान परम पवित्र आत्मा हूं, विधि उसकी तरंगें मुझमें आ रही हैं, ये पहली वृत्ति।

**2. आत्मिक भाई-भाई की वृत्ति** - दूसरी वृत्ति है आज की मुरली से आत्मिक भाई-भाई की वृत्ति। इस पर भी भीतर काम करना है। नहीं तो काका, मामा, चाचा कुछ न कुछ मकड़ी का जाल हम बुनते ही रहते हैं। मन को, व्यक्ति को कोई चाहिए प्रतिपल किसी की तलाश है किसी व्यक्ति की तलाश है, ऐसा नहीं की पति या पत्नी की और प्रेम या प्रेमिका की तलाश है, पर कोई सहारा कोई ऐसा जो प्रेम करे, जिसके कंधों पर सिर रखकर रोया जाये, हल्का होया जाये। जो हाथ ही रख दे बस माथे पर कि तुम्हें बुखार लग रहा है, अहाहा... कोई घाव पर मरहम ही लगा दे। निरंतर खोज है कोई सहारा, कोई आधार, ऊपर से नाम सेवा का है कि हम साथ में सेवा करते हैं परन्तु भीतर से अंतर्मन में, मानस के कोई एक हिस्से को ऐसा सुख मिल रहा है उससे कि एक अनगिनत सा जुड़ाव, लगाव और चिपकाव पैदा हुआ है। बाकी सब भाई-भाई है पर उसे भाई-भाई नहीं देखा जा सकता, क्योंकि काम कहीं और हुआ है। उससे प्रेम की तरंगें आई हैं, कैसे उसे भाई माने वो तो भाई से कुछ और है, थोड़ा सा ज्यादा और हां जिससे जितनी अधिक आसक्ति उससे ही अधिक ज्यादा क्या होता है? दुःख मिलता है। एक था चिड़ा, एक थी चिड़ी, दोनों की शादी हो गई, हो गये चिडचिड़े। चिड़ा चिड़ा ही रहे और चिड़ी चिड़ी ही रहे तो अच्छा है। साइकोलोजिकल डिस्टेंसिंग (Psychological Distancing) दूरी कायम रहे। निरंतर किसी के भावना के जगत में, देश में, राज्य में, प्रवेश करने की चेष्टा नहीं करनी है क्योंकि उस राज्य में एक बार प्रवेश कर लिया बाहर आना मुश्किल। इसलिए जो हल्के-फुल्के परिचित से लोग हैं उनसे कभी दुःख नहीं होता दुःख किससे होता है? अपनों से। सभी आत्मायें हैं, बस यहीं तक रखो, संबंध के तल पर नहीं लाना है। मन को स्वमान, आत्मिक दृष्टि का अभ्यास। विधि जैसे बाप की आत्मिक दृष्टि है, सबको किस नजर से देखता है वो? बच्चे इसलिए उसको दुःख नहीं होता सब बच्चे हैं, छोटे है, संभल जायेंगे, ठीक हो जायेंगे, अनंत धैर्य है उसका शायद। वो केवल

मित्र होता या गुरु होता तो इतना कम धैर्य होता परन्तु वो पिता के रूप में उसका रूप ज्यादा है, बाकी सभी रूप है पर प्रधानता उसने किस रूप की ली है संगम पर? बापा है सब कुछ सारे प्रोफेशन्स (Professions) वो है, सारे संबंध उसमें हैं परन्तु प्रधानता किसकी है? बाप के रूप की। ये उसके अपने प्रोटेक्शन (Protection) के लिये भी अच्छा है, नहीं तो गुरु अगर बन जाये तो रोज-रोज उसको क्या करना पड़ेगा? चांटा ही लगाना पड़ेगा। एक पिता अपने बच्चे के साथ कहीं जा रहे थे, बच्चे ने कहा मुझे चॉकलेट चाहिए। पिता ने एक दुकान के सामने गाड़ी रोकी, चॉकलेट लेने अंदर गये, बाहर आये देखा बच्चा नहीं था, देखा बच्चा कहां चला गया? तो बच्चा देखा एक तरफ जा रहा है। एक बिल्डिंग (Building) है, उसकी तरफ बच्चा जा रहा है। वो अपने बेटे से कहता तुम कहां जा रहे हो? पिता जी, पता नहीं मुझे क्या लग रहा है, पिताजी जैसे इस रास्ते ,को इस गली को मैं जानता हूं और ये जो बिल्डिंग सामने दिख रही है ऐसा लगता है किसी पुराने जन्म में इस बिल्डिंग से मेरा संबंध है। पिताजी एक चमाट लगाते हैं, तमाचा मारते हैं और कहते हैं अरे ये तुम्हारी स्कूल है, पिछले एक साल से लॉकडाउन (Lockdown) की वजह से बंद है। तुम भी भूल गये थे 2500 साल से, अगर वो गुरु बन जाये तो रोज एक चमाट लगानी पड़ेगी उसको। हां, ये-ये यूनिवर्सिटी (University) दिखी, लगता है कभी यहां आये थे, यहां की जो बातें है ना, पवित्र बनो योगी बनो सुनी जैसी लगती है। तुम्हारी बंद हुई स्कूल है, जो अब खुली है। दूसरी वृत्ति है भाई-भाई की, भाई-बहन भी नहीं, गड़बड़ है, केवल भाई-भाई, सभी आत्मायें हैं, बस। इसके अतिरिक्त कुछ भी कोई भी संबंध जोड़ा कि बंधन चालू। कुछ भी जोड़ा तो कुछ भी किसी का गुरु ही बन गये, किसी का गाइड बन गये, किसी का मार्गदर्शक बन गये। एक बार तो मार्गदर्शन कर दिया, पर वो छोड़ेगा क्या? फिर-फिर आयेगा कि अब फिर से गाइड करो। अपाहिज बना रहे हो उसको। गिरने दो, उसको संभलने दो। मैं खाना खाऊंगा, मेरे खाना खाने से किसी और का पेट नहीं भरेगा। मैं देख रहा हूं, मेरे देखने से किसी और को दर्शन नहीं होगा। हर एक को अपना मार्ग खुद चुनना है, हर एक को अपने मार्ग पर खुद चलना है। एकांगी पगडंडी है, कोई किसी के साथ नहीं आयेगा। इसीलिए मेरा मार्गदर्शन भी तुम्हारे मार्ग में बाधा हो सकता है।

**3. कल्याण की वृत्ति** - बाबा ने आज की मुरली में एक झाड़ को इमर्ज किया है कौन सा? वृत्ति है बीज, वृक्ष क्या है? विधि और फल क्या है? सिद्धि। एक और वृक्ष को इमर्ज किया है। वृत्ति है बीज, तना है दृष्टि और उसका विस्तार है सृष्टि। वृत्ति, दृष्टि, सृष्टि। वृत्ति, विधि, सिद्धि। यदि वृत्ति ठीक है तो विधि भी यथार्थ होगी और फल भी यथार्थ होगा। काम किस पर करना है? बीज पर। कल की मुरली में महावाक्य था या मुरली के अंदर था तुम कौन हो? मास्टर बीजरूप, स्पीच्युअल लाइट हाउस (Spiritual Light



House) . मैं बीज हूं, अभ्यास करना है। वृत्ति बीज है, वृत्ति पर काम करना है, विधि अपने आप आयेगी, सिद्धि अपने आप आयेगी, अपने आप। हेनरी फोर्ड (Henry Ford) था कभी, जिसने सबसे पहली कार इजाद की थी। वो एक ऐसा व्यक्ति था, ऐसा व्यक्ति था, पता नहीं कैसा उसका मानसिक मेंटल सेटअप (Mental Setup) था कि वैज्ञानिकों ने उस पर रिसर्च किया और कहा कि इस व्यक्ति से, बहुत अमीर था इतना धनपति उसके जैसा धनी कोई नहीं होगा उस समय फोर्ड की कारें आती थीं पहले, हेनरी फोर्ड ये व्यक्ति ऐसा है कि इसके पास संपत्ति है, धन है, अगर सारा अभी के अभी छीन लिया जाये, दिस मैन इस बॉर्न फॉर सक्सेस (This Man Is Born For Success), तो वो एक साल के अंदर जितना उसके पास पैसा है उससे डबल बना लेगा। वो बना ही ऐसा है, वो प्लानिंग (Planning) ही ऐसा करता है। उसकी वृत्ति में ही सक्सेस (Success) भरी पड़ी है, वो है ही ऐसा कि बाहर की कोई परिस्थिति उसे प्रभावित नहीं करती, बस सफलता- सफलता उसके रगों में समाई हुई है। ये उन वैज्ञानिकों का निष्कर्ष था कि ये ऐसा व्यक्ति था, ऐसा डिवाइस (Device) करता है, ऐसा प्लानिंग (Planning) करता है कि वहां असफलता की कोई संभावना ही नहीं क्योंकि इसने क्या किया? सोच-सोच कर वृत्ति को ही वैसा बना दिया है। इस कल्याण की वृत्ति को क्या कर देना है? बीज बना देना है कि मेरे द्वारा सभी का कल्याण हो, सबका मंगल हो। सभी का अमृतवेले संकल्प करना है, स्वमान- मैं विश्व कल्याणकारी आत्मा हूं। विधि- जो विश्व कल्याणकारी परमात्मा है उसकी कल्याण की किरणें मुझमें आ रही है, मैं भी वही बनते जा रहा हूं जो वो है। कल्याण-कल्याण, सबका कल्याण करना है। आज सारे दिन भर मेरे द्वारा किस-किस का कल्याण हुआ और कल्याण हम करते हमारे शब्दों से, हमारा कोई शब्द ऐसा न हो जो किसी का अहित कर दे। चेतना को जागृत कर दे, तीव्र पुरुषार्थी बना दे।

**4. स्नेह की वृत्ति** - स्वमान - मैं स्नेही आत्मा हूं, विधि - स्नेह के सागर से स्नेह की तरंगें मुझ पर आ रही हैं। काम तरंगों पर करना है, बायब्रेशन्स (Vibrations) पर करना है, शब्दों पर नहीं। शब्द कम हो, स्वमान के शब्द कम ही होते हैं। योग में सुबह कॉमेंट्री (Commentary) लगाकर बैठने की आवश्यकता नहीं है, वहां तो शब्दों से परे जाना है। गीतों की आवश्यकता नहीं है, वहां तो तरंगों के तल पर काम करना है। कुछ रिपीट करने की भी आवश्यकता नहीं, एक ही स्वमान पूरे अमृतवेला चल सकता है, मैं स्नेही आत्मा हूं बस। स्नेह के सागर से स्नेह की किरणें भीतर प्रवेश कर रही हैं।

**5. सहयोग की वृत्ति** - मैं सहयोगी आत्मा हूं, सहयोग के सागर से सहयोग की तरंगें मुझ में प्रवेश कर रही हैं, बस इतना ही अभ्यास, कोई नये शब्द नहीं जोड़ो, अनुभव को जोड़ो। शब्दों को अनुभव के तल पर लाना है, अनुभव शब्दातीत है। शब्दों का साम्राज्य, अनुभवों का साम्राज्य अलग-अलग है।

**6. निःस्वार्थपने की वृत्ति** - जो कुछ करूं निष्काम हो, निष्काम का सागर वो परमात्मा है, उससे तरंगें आ रही है, निष्काम बनते जा रहा हूं। जो कुछ करूं, उसे निष्काम करते जाऊँ।

**7. निर्विकल्प की वृत्ति** - ये और आगे-आगे की वृत्तियां है, स्नेह देना आसान है, शायद कल्याण सोचना आसान है, निःस्वार्थ हो जाना भी आसान है, पर आगे-आगे बढ़ते जाओ गहराई है। निर्विकल्प, किसका कल्याण कर रहे जिसकी सेवा कर रहे उसके बारे में कभी ऐसा होता है कि उसके बारे में कितने विकल्प चलते हैं? मदद तो कर रहे है उसकी, कोर्स करा रहे हैं पर उसकी बहुत सारी आदतें दिखाई पडती हैं, वो सुन नहीं रहा है ठीक से, कल जो उसको सिखाया था, आज उसको याद नहीं है। किसका कल्याण तो कर रहे परन्तु विकल्प से मुक्त नहीं है।

**8. निरव्यर्थ की वृत्ति** - ये वृत्ति तो शायद अंतिम अवस्था है क्योंकि जिसकी हम सेवा करते हैं, जिसका कल्याण करते हैं, जिसे स्नेह देते, जिससे प्यार करते, जिसे सहयोग दे रहे हैं उसके प्रति भी व्यर्थ भी चलता ही चलता है। हमने उसको कहा इतने बजे आना वो नहीं आया वो 10 मिनट व्यर्थ चला न? भगवान कह रहा है, निरव्यर्थ वृत्ति। कितनी ऊंची अवस्था है वृत्ति की।

**9. अभिमान और अपमान की वृत्ति से मुक्त स्वमान की वृत्ति** - स्वमान में स्थित और दूसरों को स्वमान देना। जो जितना अभिमानी होगा उसको अपमान भी उतना महसूस होगा। या फिर ये कहें अगर किसी ने हमें कुछ कहा और हमें अपमानित महसूस होता है अर्थात् यह हमारे अहंकार का लक्षण है क्योंकि जो निरहंकारी है उसका तो अपमान कोई कर नहीं सकता। अपमान महसूस हो रहा है अर्थात् कूट कूट कर अंदर क्या भरा है? अभिमान, मैं। अपनी एक इमेज (Image), इसी ने उस इमेज को ठेस पहुंचाई है। जो मैं चाहता हूं कि दूसरे मुझे ऐसा देखें मैं योगी हूं, तपस्वी हूं, वक्ता हूं, सेवाधारी हूं, अथक सेवाधारी हूं, दिन-रात सेवा करता हूं, उमंग-उत्साह से सेवा करता हूं। मेरी इस छवि को किसी ने धूमिल करने की कोशिश की। किसी ने कहा- यह आलसी है, चोट पहुंची। किसी ने कहा- ये धोखेबाज है, चोट पहुंची। किसी ने कहा- ये जो कुछ करता है न, कथनी-करनी में बहुत भेद है, चोट पहुंची। चोट पहुंची अर्थात् मुझे अपनी विशेषताओं का अहंकार है सूक्ष्म में, जो मैं कहता तो नहीं हूं पर है जरूर, प्रमाण चोट क्यों पहुंची फिर? स्वमान में रहना और स्वमान देना, वृत्तियों पर काम करना है और वृत्तियों पर काम करना अर्थात् संस्कार बनाना बड़े गहरे तल का काम है मन का ऑपरेशन (Operation) है। इसमें कुछ स्थूल कुछ भी नहीं है क्योंकि मन बहुत चंचल है और स्थूल से सूक्ष्म की ओर जाना है। सूक्ष्मतर से सूक्ष्मतर की ओर और वहां जाते ही भीतर की सच्चाई प्रकट होगी, एक-एक परतें खुलेंगी, पता चलेगा मन में हजारों वृत्ति जन्म ले रही है एक ही साथ, एक

ही दिन में नये-नये समय पर नयी-नयी जगह पर अलग-अलग व्यक्ति और परिस्थितियों के संबंध में नयी-नयी वृत्तियां, इन सभी वृत्तियों को साक्षी होकर देखते रहना, समता में स्थित रहना, स्थितप्रज्ञ रहना, यह काम गहरा काम है। पुराने हैं, बाबा ने कहा पुराने अर्थात् पक्के। पक्का बनना है पुराना बनना। स्नेही हो, स्नेही स्नेही की कमियां देख नहीं सकते। ये आज की मुरली थी। जिसमें बाबा ने वृत्ति और विधि को रेखायें भी कहा, कहीं पर बीज भी कहा इस बीज को पानी डालना है, इस बीज को बोना है मन की भूमि पर, अवचेतन मन की भूमि और मिट्टी पर और रोज ऑटो सजेशनस (Auto Suggestions) देते रहना। ऐसा वायुमण्डल, ऐसा वातावरण क्रियेट करना कि ये बीज फलीभूत हो वृक्ष बन जाये। छत्रछाया बन जाये असंख्य आत्माओं के लिये, वट वृक्ष बन जाये चेतना। एक छोटा सा अभ्यास कर सकते हैं। पेड़ों में बहुत ऊर्जा होती है, पेड़ों में बहुत शक्ति होती है, जहां पर भी पेड़ हो ऋषि मुनियों ने पेड़ों के नीचे तपस्या की है। पेड़ों से निरंतर प्राण ऊर्जा निकल रही होती है, पेड़ों के पास जाना, पेड़ों से बात करना, पेड़ों के पत्तों को देखना, पत्तों के फायदे के बारे में सोचना, फलों के बारे में सोचना, पेड़ के गुणों के बारे में सोचना, पेड़ के तना के बारे में सोचना, पेड़ की जड़ों के बारे में सोचना, कभी पेड़ की छाया के नीचे बैठना, पेड़ को हग करना, ये सारे अभ्यास बताये जाते हैं प्रकृति के समीप आने के लिये। ऐसा ही एक अभ्यास हम कर सकते हैं परम धाम में जो वृक्ष हैं उस वृक्ष को अमृतवेले जाकर पकड़ लेना वो वृक्ष उल्टा है।

**ऊर्ध्वमूलमधःशाखमश्वत्थं प्राहरव्ययम्।**

**छन्दांसि यस्य पर्णानि यस्तं वेद स वेदवित्॥**

वो जड़े ऊपर हैं, तना है, और फिर शाखायें हैं, अमृतवेला फरिश्ता रूप में जाना और उस वृक्ष को ही पकड़ लेना अगर इस झाड़ को पकड़ने से वो इनर्जी फील होती है तो उस कल्प वृक्ष को पकड़ने से कैसी ऊर्जा चेतना में प्रवेश करेगी?

ऐसी होलीहंस आत्माओं को, ऐसे विशेष आत्माओं को, ऐसे श्रेष्ठ आत्माओं को, श्रेष्ठ वृत्ति वाली आत्माओं को, ऐसी शुद्ध बुद्धि वाली बुद्धिवान आत्माओं को, ऐसे श्रृंगारी मूर्त आत्माओं को, ऐसे नौ वृत्तियां धारण करने वाली श्रेष्ठ आत्माओं को, ऐसी परम पवित्र आत्माओं को, ऐसी परखने और निर्णय करने की शक्ति धारण करने वाली आत्माओं को, समय प्रमाण धारण करने वाली आत्माओं को, समय जाने के बाद नहीं, पहले दूसरे और तीसरे, तीसरे की बात ही छोड़ो। ऐसे चश्मा जैसा होगा वैसा दिखेगा ऐसे कौन सा चश्मा पहनना है? स्वमान का और गुण देखने का चश्मा ऐसे ओटे से अर्जुन पहले मैं इस पर आप सभी चिंतन कर सकते हैं। पुरूषार्थ में पहले मैं, स्वपरिवर्तन में पहले मैं, और सेवा में? जहां पर ग्लैमर है, जहां पर नाम होने वाला है, क्रेडिट मिलने वाला है, स्तुति होने

वाली है, प्रशंसा होने वाली एकनोलेजमेंट (Acknowledgement) मिलने वाली है, फोटो आने वाली है वहां पहले आप। ऐसी पहले आप करने वाली आत्माओं को और ऐसा पहले आप और पहले मैं को बदली किया तो भाग्य ही बदली हो जायेगा। ऐसे भाग्यवान आत्माओं को ऐसे कम्बाइन्ड (Combined) स्वरूप आत्माओं को, ऐसे स्वमान देने वाली आत्माओं को, ऐसे विस्तार को सार में लाने वाली आत्माओं को, ऐसे यहां से जाने के बाद एक बार फिर से मुरली पढ़ लेना और पढते पढते सो जाना ताकि जो पढ़ा वो वृत्ति में प्रवेश कर जाये, योग निद्रा। ताकि वो संस्कार बन जाये और जब संस्कार बनता है तो सब कुछ सहज हो जाता है फिर पुरूषार्थ नहीं करना पड़ता। ऐसी सहज पुरूषार्थी आत्माओं को बापदादा का याद-प्यार गुडनाइट और नमस्ते। हम रूहानी बच्चों की रूहानी बापदादा को याद-प्यार और गुडनाईट और नमस्ते।

**ओम शांति**